# Study material for B.A. Part II
## Sanskrit

Dr. Savitri Singh.
Associate Professor
Deptt. of Sanskrit, R.M.C. SASARAM

Date : 1. 7. 2020

## 'शुकनासोपदेश के आधार पर गुरूपदेश की महिमा'

महाकवि बाण कृत कादम्बरी का एक महत्वपूर्ण भाग शुकनासोपदेश है। कादम्बरी के इस अंश में बाणभट्ट ने महामंत्री शुकनास के माध्यम से राजकुमार चन्द्रापीड को जो उपदेश दिया है। वह अत्यन्त सारगर्भित एवं प्रासंगिक है। कवि ने शुकनास तथा चन्द्रापीड (राजकुमार) के माध्यम से युवावस्था में होने वाली उच्छृंखलताओं, निरंकुशताओं, अहंकार, शास्त्र-मर्यादाओं का उल्लंघन, लक्ष्मी की चंचलता आदि स्वाभाविक दोषों का अत्यन्त सजीव चित्रण किया है।

इस क्रम में महामंत्री शुकनास उस चन्द्रापीड राजकुमार का उपदेश करना प्रारम्भ करते हैं जिनके राज्याभिषेक की तैयारी प्रारम्भ है और वह स्वयं मंत्री के निवास पर मिलने के लिए आया है। अर्थात् उपदेश देने का और लेने की पात्रता एवं परिस्थितियाँ मौजूद हैं।

शुकनास ने कहा -

तात! चन्द्रापीड! विदितवेदितव्यस्य अधीतसर्वशास्त्रस्य ते नाल्पमप्युपदेष्टव्यमस्ति। केवलञ्च निसर्गत एव अभानुभेद्यमरत्नालोकच्छेद्यमप्रदीपप्रभापनेयमतिगहनं तमो यौवनप्रभवम्।

अर्थात् हे पुत्र चन्द्रापीड! सम्पूर्ण ज्ञात विषयों के ज्ञाता, सर्वशास्त्रों के जानकार तुम्हारे लिए कुछ

→



उपदेश देना नहीं है, किन्तु स्वभाव से ही अत्यन्त गहन यौवन से उत्पन्न होने अज्ञानान्धकार, सूर्य की किरणों से अभेद्य, रत्नों के प्रकाश से भी दूर न किया जाने वाला तथा दीपों के प्रकाश से भी मिटाया न जा सकने वाला होता है। किन्तु आप जैसे पवित्र मनवाले व्यक्ति ही उपदेश देने योग्य होते हैं क्योंकि मलरहित मन में, स्फटिक मणि में, सरलता से प्रविष्ट होने वाली चन्द्रमा की किरणों के समान, उपदेश गुण सरलता से सफल होते हैं।

" भवादृशा एव भवन्ति भाजनानि उपदेशानाम्। अपगतमले हि मनसि स्फटिकमणाविव रजनिकर-गभस्तयो विशन्ति सुखेन उपदेशगुणाः।"

युवावस्था में स्वाभाविक रूप से युवाओं की मनःस्थिति ऐसी होती है कि गुरुजनों का सदुपदेश भी कान में पड़कर उसी प्रकार पीड़ा उत्पन्न करता है जैसे कर्णरन्ध्र में पड़ा हुआ पानी। किन्तु शिष्ट और मलरहित निर्मल मन वाले में हाथी को पहनाये हुए शंखाभरण की भाँति मुख की शोभा को बढ़ाता देता है।

गुरुवचनममलमपि सलिलमिव महदुपजनयति श्रवणस्थितं शूलमभव्यस्य। इतरस्य तु करिण इव शङ्खाभरणमाननशोभासमुदयमधिकतरमुप-जनयति।

→



जिस प्रकार चन्द्रमा प्रदोष काल में उत्पन्न हुए सम्पूर्ण अन्धकार को अपनी उज्ज्वल किरणों से मिटा देता है। उसी प्रकार गुरुजनों का उपदेश भी दोषजनित सम्पूर्ण अज्ञानान्धकार को दूर कर देता है।

हरति च सकलम् अतिमलिनमप्यन्धकारमिव दोषजातं प्रदोषसमये निशाकर इव गुरूपदेशः।

गुरु के उपदेश से पुरुषों के समस्त दोष गुणों में बदलते जाते हैं।

उपर्युक्त परिस्थितियों एवं पात्रता की व्याख्या और वर्णन करते हुए शुकनास कहते हैं कि :

अयमेव चानास्वादितविषयरसस्य ते काल उपदेशस्य। कुसुमशरशरप्रहारजर्जरिते हि हृदये जलमिव गलत्युपदिष्टम्।

अर्थात् विषयवासनाओं के आनंद का उपभोग न किये हुए तुम्हारे लिए उपदेश देने का यही उपयुक्त अवसर है क्योंकि कामदेव के बाणों से घायल हृदय में दिये हुए उपदेश का प्रभाव उसी प्रकार नहीं पड़ता है जैसे चलनी में पानी नहीं ठहरता - बह जाता है।

शेष अगले भाग में